

साखी(कबीर)

कक्षा-दसवी

विषय-हिन्दी

पाठ -३

पाठ का नाम –साखी (कबीर)

PPT-5 (प्रश्नोत्तर)

CHANGING YOUR TOMORROW

साखी प्रश्न अभ्यास (महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर)

- (क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये
- प्रश्न 1 -: मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है ?
- उत्तर -: कबीरदास जी के अनुसार जब आप दूसरों के साथ मीठी भाषा का उपयोग करोगे तो उन्हें आपसे कोई शिकायत नहीं रहेगी। वे सुख का अनुभव करेंगे और जब आपका मन शुद्ध और साफ़ होगा परिणामस्वरूप आपका तन भी शीतल रहेगा।
- प्रश्न 2 -: दीपक दिखाई देने पर अँधियारा कैसे मिट जाता है ? साखी के सन्दर्भ में स्पष्ट किजिए।
- उत्तर -: तीसरी साखी में कबीर का दीपक से तात्पर्य ईश्वर दर्शन से है तथा अँधियारा से तात्पर्य अज्ञान से है। ईश्वर को सर्वोच्च ज्ञान कहा गया है अर्थात् जब किसी को सर्वोच्च ज्ञान के दर्शन हो जाये तो उसका सारा अज्ञान दूर होना सम्भव है।
- प्रश्न 3 -: ईश्वर कण - कण में व्याप्त है , पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते ?
- उत्तर -: कबीरदास जी दूसरी साखी में स्पष्ट करते हैं कि ईश्वर कण कण में व्याप्त है ,पर हम अपने अज्ञान के कारण उसे नहीं देख पाते क्योंकि हम ईश्वर को अपने मन में खोजने के बजाये मंदिरों और तीर्थों में खोजते हैं।

- प्रश्न 4 -: संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन ? यहाँ 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतिक हैं ? इसका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है ? स्पष्ट कीजिए।
- उत्तर -: कबीरदास के अनुसार संसार के वे सभी व्यक्ति जो बिना किसी चिंता के जी रहे हैं वे सुखी हैं तथा जो ईश्वर वियोग में जी रहे हैं वे दुखी हैं। यहाँ 'सोना' 'अज्ञान' का और 'जागना' 'ईश्वर - प्रेम' का प्रतिक है। इसका प्रयोग यहाँ इसलिए हुआ है क्योंकि कुछ लोग अपने अज्ञान के कारण बिना चिंता के सो रहे हैं और कुछ लोग ईश्वर को पाने की आशा में सोते हुए भी जग रहे हैं।
- प्रश्न 5 -: अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है ?
- उत्तर -: अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने निंदा करने वाले व्यक्तियों को अपने आस पास रखने का उपाय सुझाया है। उनके अनुसार निंदा करने वाला व्यक्ति जब आपकी गलतियाँ निकालेगा तो आप उस गलती को सुधार कर अपना स्वभाव निर्मल बना सकते हैं।
- प्रश्न 6 -: ' ऐकै अषिर पीव का , पढ़ै सु पंडित होइ ' - इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है ?
- उत्तर -: 'ऐकै अषिर पीव का , पढ़ै सु पंडित होइ ' - इस पंक्ति में कवि ईश्वर प्रेम को महत्त्व देते हुए कहना चाहता है कि ईश्वर प्रेम का एक अक्षर ही किसी व्यक्ति को पंडित बनाने के लिए काफी है।
- प्रश्न 7 -: कबीर की उद्धृत साखियों की भाषा की विशेषता प्रकट कीजिए।
- उत्तर -: कबीर की साखियों में अनेक भाषाओं का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। उद्धृत साखियों की भाषा की विशेषता यह है कि इसमें भावना की अनुभूति, रहस्यवादिता तथा जीवन का संवेदनशील संस्पर्श तथा सहजता को प्रमुख स्थान दिया गया है।

(ख) निम्नलिखित पंक्तिओं के भाव स्पष्ट कीजिये

- (1) ' बिरह भुवंगम तन बसै , मंत्र न लागै कोइ। '
- भाव -: इस पंक्ति का भाव यह है कि जब किसी मनुष्य के मन में अपनों से बिछड़ने का गम रूपी साँप जगह बना लेता है तो कोई दवा ,कोई मंत्र काम नहीं आते।
- (2) ' कस्तूरी कुंडलि बसै ,मृग ढूँढ़े बन माँहि। '
- भाव -: इस पंक्ति का भाव यह है कि अज्ञान के कारण कस्तूरी हिरण पूरे वन में कस्तूरी की खुसबू के स्रोत को ढूँढ़ता रहता है जबकि वह तो उसी के पास नाभि में विद्यमान होती है।
- (3) ' जब मैं था तब हरि नहीं ,अब हरि हैं मैं नहीं। '
- भाव -: इस पंक्ति का भाव यह है कि अहंकार और ईश्वर एक दूसरे के विपरीत हैं जहाँ अहंकार है वहाँ ईश्वर नहीं ,जहाँ ईश्वर है वहाँ अहंकार का वास नहीं होता।
- (4) ' पोथी पढ़ि - पढ़ि जग मुवा , पंडित भया न कोइ। '
- भाव -: इस पंक्ति का भाव यह है कि किताबी ज्ञान किसी को पंडित नहीं बना सकता , पंडित बनने के लिए ईश्वर - प्रेम का एक अक्षर ही काफी है।

THANKING YOU
ODM EDUCATIONAL GROUP